

- Περικλῆς *Pericles* S. 27. Laudatur a Gorgia ob facundiam S. 10. et a Callicle tribuitur ei nomen boni viri S. 58. quo non dignus iudicatur a Socrate S. 71. 72. 74.
- Περικουσία *Nimia verecundia adductus* S. 42. περί enim in compositione augendi vim habet, ut περιχάρεια et περιωδυνία de Legg. 5. p. 214.
- Περιπατεῖν *Incedere* S. 45. id. qu. περιιέναι. add. S. 67.
- Περικουλάσθαι *Spoliari omnibus bonis* S. 41.
- Περιέρεισθαι *Deferrī in eandem rem* S. 73. Quibus hoc in disputando accidit, iis alias dicitur ὁ λόγος εἰς ταυτὸν περιφερόμενος ἦκειν de Legg. 2. p. 72. et 3. p. 129. πάλιν ἦκειν εἰς ταυτὸν.
- Περιττὸν [τὸ] *Numerus impar* S. 6. 8. 15. Opponitur τὸ ἄρτιον, ut τὰ περί τὸ περιττὸν, et τὰ περί τὸ ἄρτιον S. 6. v. Περὶ.
- Πέρυσι *Superiori anno* S. 29.
- Πεπτευτικὴ *Ars calculis ludendi* S. 5. int. τέχνη.
- Πέφυκα v. in Φύω.
- Πῆ εἴ πη *Si quo pacto* S. 82.
- Πιθανόν *Ad persuadendum aptum, atque accommodatum* S. 41. διὰ τὸ πιθανόν τε καὶ πειστικόν S. 4. v. Πειστικός. *πιθανόν εἶναι *Probare: placere* S. 13. de rhetore. *πιθανώτερος *Probabilior* S. 11. 13. πιθανώτερον *Probabilius* S. 11. Neutro Adiectivi loco Adverbii posito. *πιθανώτατος λέγειν S. 35. v. Παρασκευάζειν.
- Πίδος *Vas: dolium* S. 70. πίδος τετραγώνος *Vas perforatum* S. 47. *πίδοι *Dolia: vasa* S. 48.
- Πικρὸς *πικρὸν τι χοῆμα Homo admodum molestus* S. 40. *πικροὶ λόγοι *Sermones, quibus quis in odium aliorum adducitur, πικροὺς λόγους λέγειν Sermonibus cum discipulis habitis in eorum odium adducere senes Socrates accusabatur* S. 78. *πικρότατα πόματα *Potus admodum amari* S. 77.
- Πιμπλάναι *Replere* S. 48.
- Πίνδαρος *Pindarus, poeta clarissimus, laudatur* S. 39. 42.
- Πίνειν *Bibere* S. 48. 51. 60. quibus locis additur διψῶντα. v. Διψῆν τὸ πίνειν *Aëlio potandi: potatio* S. 51. v. Ἐν et Κατά.